

ग्रामीण महिलाओं के विकास में गैर सरकारी संगठनों का सराहनीय योगदान

¹कोमल कृति, ²डॉ. आरती सिंह

**“किसी समाज के प्रभावशाली विकास के लिए
महिलाओं के सशक्तिकरण जैसा कोई साधन नहीं”**

- कोफ़ी अन्नान

परिचय

भारत गांवों का देश है और ग्रामीण महिलाओं के जीवन को बेहतर बनाने के लिए, भारत सरकार कई विकासात्मक पहल लागू कर रही है। हमारे धर्मग्रंथों में महिलाओं को सदैव आध्यात्मिकता के प्रतीक के रूप में देखा गया है। महिलाएं समाज की कुल आबादी का आधा हिस्सा है। भारतीय समाज में महिलाओं की प्रमुख भूमिका रही है। उन्हें परिवार के गुरुत्वार्कषण के केंद्र के रूप में वर्णित किया गया है। दुनिया के कई हिस्सों में महिलाओं की आवाज़ नहीं सुनी जाती, उनके काम को महत्व नहीं दिया जाता। महिलाओं का भविष्य अब पुरुषों, सरकारों, समुदायों, धर्मों और परिवारों के लोगों द्वारा लिए गए निर्णयों पर निर्भर करता है। वर्षों से महिलाओं को समाज के भेदभाव और पूर्वाग्रह का सामना करना पड़ा है। हमारे जीवन के हर पहलू में पुरुष महिलाओं से श्रेष्ठ हैं। ग्रामीण भारत में, महिलाओं को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव

डालती हैं। सदियों से ग्रामीण इलाकों में लाखों महिलाएं गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, रीति-रिवाजों और परंपराओं का बोझ उठा रही हैं। भले ही आज हम यह कहकर अपनी पीठ थपथपा लें कि आजादी के 75 सालों में हमारी महिलाएँ चाँद पर पहुँच गई हैं, फाइटर प्लेन उड़ा रही हैं, ओलंपिक में पदक जीत रही हैं, बड़ी-बड़ी कंपनियाँ चला रही हैं या राष्ट्रपति बनकर देश की बागडोर संभाल रही हैं, लेकिन व्यावहारिक तौर पर देखें तो यह संख्या महिलाओं की आबादी का अंशमात्र ही है। हमारे समाज की महिलाओं का एक बड़ा तबका आज भी सामाजिक बंधनों की बेड़ियों को पूरी तरह से तोड़ नहीं पाया है।

ग्रामीण महिलाओं द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ

महिलाएं राष्ट्र के भाग्य की निर्माता और निर्धारक हैं। लेकिन ग्रामीण महिलाओं और समाज में उनकी भूमिका के बारे में कुछ धारणाएँ और वर्जनाएँ हैं। ये धारणाएँ और वर्जनाएँ ग्रामीण महिलाओं के विकास में बाधक हैं। ग्रामीण महिलाओं को विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनमें से कई

¹कोमल कृति (पीएचडी शोधकर्ता, गृह विज्ञान)

²डॉ. आरती सिंह (सहायक प्रोफेसर, गृह विज्ञान)

विस्तार शिक्षा एवं संचार प्रबंधन, SHUATS, प्रयागराज उत्तर प्रदेश

सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों में निहित हैं। ग्रामीण महिलाओं के सामने आने वाली कुछ प्रमुख चुनौतियाँ:

शिक्षा तक सीमित पहुंच: स्कूलों की दूरीए परिवहन की कमीए सांस्कृतिक मान्यताओं और आर्थिक बाधाओं जैसे कारकों के कारण ग्रामीण महिलाओं की अक्सर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सीमित पहुंच होती है। इससे उनके व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास के अवसर सीमित हो जाते हैं।

स्वास्थ्य देखभाल तक सीमित पहुंच: ग्रामीण क्षेत्रों में आमतौर पर शहरी क्षेत्रों की तुलना में कम स्वास्थ्य सुविधाएं और संसाधन होते हैं। जिससे ग्रामीण महिलाओं के लिए मातृ देखभालए परिवार नियोजन और बीमारियों के इलाज सहित आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुंच मुश्किल हो जाती है।

लैंगिक असमानता: ग्रामीण महिलाओं को अक्सर अपने घरों और समुदायों दोनों में भेदभाव और लिंग आधारित हिंसा का सामना करना पड़ता है। उनके पास निर्णय लेने की शक्ति सीमित होती है और उनको स्वतंत्रता और गतिशीलता पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ता है।

आर्थिक चुनौतियाँ: ग्रामीण महिलाएँ अक्सर कृषि और अनौपचारिक क्षेत्र के कामों में लगी रहती हैं। जिसकी विशेषता कम वेतनए लंबे काम के घंटे और

नौकरी की सुरक्षा की कमी है। उनके पास वित्तीय सेवाओंए ऋण और भूमि स्वामित्व तक सीमित पहुंच है। जो उनकी आर्थिक स्वतंत्रता और उनके भविष्य में निवेश करने की क्षमता में बाधा उत्पन्न करती है।

बुनियादी ढांचे की कमी: ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर सड़कए बिजलीए स्वच्छ पानी और स्वच्छता सुविधाओं जैसे बुनियादी ढांचे का अभाव होता है। जो ग्रामीण महिलाओं के जीवन की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है और उनके आर्थिक और सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

प्रौद्योगिकी तक सीमित पहुंच: ग्रामीण महिलाओं में अक्सर सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों तक पहुंच की कमी होती है। जो शैक्षिक संसाधनोंए स्वास्थ्य देखभाल जानकारी और आर्थिक अवसरों तक पहुंच के लिए महत्वपूर्ण हैं।

सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंड: पारंपरिक लिंग भूमिकाएं और सांस्कृतिक मानदंड अक्सर ग्रामीण महिलाओं की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को निर्धारित करते हैं। जिससे उनके व्यक्तिगत विकास और आर्थिक सशक्तिकरण के अवसर सीमित हो जाते हैं।

गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ)

ग्रामीण महिलाओं के विकास में सरकारी संगठनों के साथ साथ गैर सरकारी संगठनों का भी

सराहनीय योगदान हो रहा है। एक गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) एक स्वावलंबी संगठन है जो सरकार से स्वतंत्र है। आजकल, गैर-सरकारी संगठन राष्ट्रों के प्रमुख भाग में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं हैं। भारत में गैर सरकारी संगठनों के काम का दायरा और विविधता कई क्षेत्रों में देखा जा सकता है जिनमें साक्षरता और शिक्षा अभियान, विकासोन्मुख परियोजनाएँ, पर्यावरण संरक्षण और सीमांत वर्गों की सुरक्षा आदि शामिल हैं। यह अब संस्थागत ढांचे का एक महत्वपूर्ण घटक है जो लैंगिक समानता, ग्रामीण विकास और गरीबी को संबोधित करता है। गैर सरकारी संगठनों को अब सामाजिक परिवर्तन और विकास के विख्यात एजेंट के रूप में देखा जाता है। आजीविका परियोजनाओं और सामाजिक कल्याण पहलों का उपयोग करते हुए, कई गैर सरकारी संगठनों ने गरीबी के लक्षणों को संबोधित करने का निर्णय लिया है, जिसमें निम्न शैक्षिक मानक, खराब स्वास्थ्य, अपर्याप्त आवास और खराब स्वच्छता शामिल हैं। गरीबी कम करना और ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण ग्रामीण भारत में सक्रिय गैर-सरकारी संगठनों का मुख्य लक्ष्य है। गैर सरकारी संगठनों ने ग्रामीण महिलाओं के विकास में सहायता के लिए वित्तीय सहायता, ऋण, शिक्षा, प्रशिक्षण और अन्य संबंधित गतिविधियाँ प्रदान करने के लिए अपने कार्यों का उल्लेखनीय रूप से विस्तार किया है। कई गैर

सरकारी संगठन ग्रामीण समुदायों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।



गैर सरकारी संगठन ग्रामीण महिलाओं के विकास के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाओं और कार्यक्रमों का आयोजन कर रहे हैं। गैर-सरकारी संगठन महिलाओं को उनके अवरोधों को दूर करने और उत्पादक गतिविधियों में संलग्न होने में मदद करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान कर रहे हैं। गैर सरकारी संगठन ग्रामीण महिलाओं के विकास के कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार में कार्य कर रहे हैं। गैर सरकारी संगठन ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं को टैक्सी चलाने, स्थानीय भोजन पकाने, सिलाई और शिल्पकला सहित विभिन्न प्रकार के कार्यों के लिए प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। इन संगठनों के माध्यम से ग्रामीण महिलाएं स्वावलंबन, आत्मविश्वास और ज्ञान की ओर बढ़ रही हैं। गैर सरकारी संगठन ग्रामीण महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक

कर रहे हैं और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में सहयोग कर रहे हैं। ये गैर सरकारी संगठन ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक तौर पर जोड़ने का कार्य भी कर रहे हैं, जिससे ग्रामीण महिलाएं आत्मनिर्भर हो रही हैं। इन संगठनों के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक विकास हो रहा है, जिससे ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से स्वावलंबी हो रही हैं। इन संगठनों के माध्यम से स्वास्थ्य और पोषण जागरूकता, रोजगार से संबंधित परियोजनाएं, शैक्षिक सुधार आदि कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं जिससे ग्रामीण महिलाओं का विकास हो रहा है। ये संगठन आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान कर रही हैं जिससे कि ग्रामीण महिलाएं आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें और आजीविका को बेहतर रूप से चला सकें। गैर सरकारी संगठनों ने कई महिला केंद्रित शिक्षण केंद्र स्थापित किए हैं जो न केवल साक्षरता दर में सुधार कर रही हैं बल्कि ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास का स्तर भी बढ़ा रही हैं। इन गैर सरकारी संगठनों ने कई कौशल विकास कार्यक्रम शुरू किए हैं और उनमें ग्रामीण महिलाओं को प्रशिक्षण दिया है जैसे सिलाई, शिल्पकला और कृषि जैसी विभिन्न आय सृजन गतिविधियां शामिल हैं। परिणामस्वरूप, ग्रामीण महिलाएं अपने परिवार की आय बढ़ाने और स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान देने में सक्षम हो गई हैं। ये संगठन नियमित स्वास्थ्य शिविर

और कार्याशालाएँ आयोजित करते हैं ताकि ग्रामीण महिलाओं को आवश्यक स्वास्थ्य सेवाओं और निवारक उपायों के बारे में जानकारी मिल सके। कार्यशालाओं और सामुदायिक चर्चाओं के माध्यम से इन्होंने ग्रामीण महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होने के लिए सशक्त बनाया है। इन्होंने ग्रामीण महिलाओं के स्वयं सहायता समूहों के गठन कि भी सुविधा प्रदान की है, जिससे एकजुटता और सामूहिक निर्णय लेने की भावना को बढ़ावा मिल सके। गैर सरकारी संगठनों के इन पहलुओं ने न केवल सामाजिक ताने-बाने को मजबूत किया है बल्कि सतत ग्रामीण विकास को भी बढ़ावा दिया है। यह स्पष्ट है कि गैर-सरकारी संगठन (एनजीओ) ग्रामीण महिलाओं की आजीविका में सुधार लाने में महत्वपूर्ण, लाभदायक और सफल योगदान निभा रहे हैं। गैर सरकारी संगठन जनसंख्या, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं के विकास में अधिक महत्वपूर्ण और मौलिक भूमिका निभा रहे हैं। महिलाओं की जीवन शैली में व्यापक परिवर्तन लाने में गैर सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका प्रतीत होती है। वे महिलाओं को स्वतंत्र और आत्म-प्रेरित बनाने और उनसे संबंधित मामलों में स्वयं निर्णय लेने में काफी सफल हैं।

अतः उपयुक्त बातों को ध्यान में रखते हुए गैर सरकारी संगठनों के सराहनीय योगदान ने ग्रामीण महिलाओं के लिए उज्ज्वल भविष्य की राह रोशन की

है, जिससे वे अपने समुदायों में बदलाव का चालक बन गई हैं। लैंगिक समानता को वास्तविकता बनाने के लिए, गैर सरकारी संगठनों को सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक, घरेलू आदि जैसे जीवन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं के हितों को आगे बढ़ाने में अपना काम जारी रखना चाहिए। गैर सरकारी संगठनों में परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करने की आवश्यक क्षमता है। गैर-सरकारी संगठनों को लोगों को उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने और उनके वांछित जीवन स्तर को प्राप्त करने के लिए संसाधन देने में महत्वपूर्ण माना जाता है। गैर सरकारी संगठन ग्रामीण आबादी के जीवन में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं और राष्ट्र के समग्र विकास के लिए हमेशा आवश्यक रहेंगे। गैर सरकारी संगठनों के समर्पित प्रयासों और योगदान का समर्थन करना जारी रखना महत्वपूर्ण है ताकि ग्रामीण महिलाओं का विकास निरंतर हो सके और वह आर्थिक रूप से सशक्त हो सकें।

